शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 91-97
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

Dr. Gautam Kumar
Bhupendra Narayan Mandal University, Madhepura, Bihar.

Corresponding Author :

Dr. Gautam Kumar
Bhupendra Narayan Mandal University, Madhepura, Bihar.

एम. एन. रॉय के चिंतन में पूंजीवाद और समाजवाद का द्वंद्व : एक आलोचनात्मक अध्ययन

सार : एम. एन. रॉय के चिंतन में पूंजीवाद और समाजवाद के बीच मौजूद द्वंद्व का एक सरल और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। रॉय आधुनिक भारत के उन प्रमुख विचारकों में से थे, जिन्होंने किसी एक विचारधारा को अंतिम सत्य मानने के बजाय, समय और अनुभव के आधार पर अपने विचारों को विकसित किया। उनका जीवन एक सतत बौद्धिक यात्रा के रूप में सामने आता है, जिसमें उन्होंने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद से लेकर अंतरराष्ट्रीय साम्यवाद और अंततः **"रेडिकल ह्यूमनिज़्म"** तक का सफर तय किया।

20वीं सदी में पूंजीवाद और समाजवाद दो प्रमुख विचारधाराएँ थीं, जिनके बीच वैचारिक संघर्ष पूरी दुनिया में देखा गया। रॉय ने दोनों व्यवस्थाओं को गहराई से समझा और उनकी खूबियों तथा सीमाओं का संतुलित मूल्यांकन किया। उनके अनुसार पूंजीवाद व्यक्ति को स्वतंत्रता, नवाचार और आर्थिक विकास का अवसर देता है, लेकिन इसके साथ ही यह आर्थिक असमानता और शोषण को भी जन्म देता है। दूसरी ओर समाजवाद समानता और सामाजिक न्याय की बात करता है, लेकिन व्यवहार में यह कई बार व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित कर देता है और सत्ता के केंद्रीकरण की ओर ले जाता है।

रॉय ने इस द्वंद्व को "स्वतंत्रता बनाम समानता" के रूप में समझाया। उनका मानना था कि यदि किसी समाज में केवल स्वतंत्रता पर जोर दिया जाए, तो असमानता बढ़ती है, और यदि केवल समानता पर ध्यान दिया जाए, तो व्यक्ति की स्वतंत्रता कम हो जाती है। इस प्रकार दोनों ही व्यवस्थाएँ अपने-अपने तरीके से अधूरी हैं।

रॉय ने **"रेडिकल ह्यूमनिज़्म"** की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने मनुष्य को सबसे केंद्र में रखा। इस विचारधारा में व्यक्ति की स्वतंत्रता, तर्कशीलता, नैतिकता और मानव गरिमा को विशेष महत्व दिया गया है। रॉय के अनुसार एक आदर्श समाज वही होगा, जहाँ स्वतंत्रता और समानता के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके। रॉय के विचार आज के वैश्वीकरण के दौर में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

वर्तमान समय में जहाँ पूंजीवाद का प्रभाव बढ़ रहा है और समाजवाद नए रूपों में सामने आ रहा है, वहाँ रॉय का संतुलित और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण हमें एक बेहतर और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करता है। हालांकि उनके **"रेडिकल ह्यूमनिज़्म"** को व्यवहार में लागू करना चुनौतीपूर्ण माना जाता है, फिर भी यह एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक विचारधारा के रूप में सामने आता है।

मुख्य शब्द :- एम. एन. रॉय, पूंजीवाद, समाजवाद, रेडिकल ह्यूमनिज़्म, स्वतंत्रता, समानता, वैचारिक द्वंद्व, आधुनिक राजनीतिक चिंतन, मानव गरिमा, सामाजिक न्याय।

एम. एन. रॉय यानी मन्मथनाथ राय आधुनिक भारत के ऐसे विचारक थे, जिनका जीवन सिर्फ एक ही विचारधारा तक सीमित नहीं रहा। वे समय के साथ बदलते रहे, सीखते रहे और अपने अनुभवों के आधार पर अपने विचारों को विकसित करते रहे। यही वजह है कि उनका चिंतन आज भी लोगों को सोचने के लिए मजबूर करता है। उन्होंने पूंजीवाद और समाजवाद दोनों को करीब से समझा और दोनों की अच्छाइयों और कमियों पर खुलकर अपनी बात रखी।

अगर हम 20वीं सदी की बात करें, तो यह समय पूरी दुनिया में दो बड़ी विचारधाराओं के टकराव का था—एक तरफ पूंजीवाद था, जो व्यक्ति की स्वतंत्रता, निजी संपत्ति और बाजार की ताकतों पर आधारित था; और दूसरी तरफ समाजवाद था, जो समानता, सामूहिक हित और संसाधनों के बराबर वितरण की बात करता था। इस समय में दुनिया के कई देश इन दोनों विचारों के बीच अपनी राह खोजने में लगे हुए थे।

एम. एन. रॉय इस पूरे दौर के सिर्फ दर्शक नहीं थे, बल्कि उन्होंने इस बहस में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। शुरुआत में वे समाजवादी विचारों से काफी प्रभावित थे और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साम्यवादी आंदोलन से भी जुड़े। उन्हें लगा कि समाजवाद ही एक ऐसी व्यवस्था है, जो समाज में फैली असमानता और शोषण को खत्म कर सकती है। लेकिन जब उन्होंने इस विचारधारा को व्यवहार में लागू होते देखा, खासकर सोवियत संघ में, तो उन्हें महसूस हुआ कि इसमें भी कई गंभीर समस्याएँ हैं।

इसी तरह, उन्होंने पूंजीवाद को भी ध्यान से समझा। उन्होंने माना कि पूंजीवाद ने विज्ञान, तकनीक और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाया है, लेकिन इसके साथ-साथ यह भी देखा कि इससे समाज में अमीर और गरीब के बीच खाई बढ़ती जा रही है और शोषण की समस्या बनी रहती है।

इस तरह Roy के लिए पूंजीवाद और समाजवाद दोनों ही पूरी तरह सही नहीं थे। उन्होंने दोनों की आलोचना की और यह समझने की कोशिश की कि आखिर एक ऐसा रास्ता क्या हो सकता है, जिसमें मनुष्य की स्वतंत्रता भी बनी रहे और समाज में समानता भी हो। आगे चलकर उन्होंने "रेडिकल ह्यूमनिज़्म" के रूप में एक वैकल्पिक सोच प्रस्तुत की, जिसमें मनुष्य को सबसे केंद्र में रखा गया।

एम. एन. रॉय का जीवन और वैचारिक यात्रा : एम. एन. रॉय का जन्म 1887 में हुआ था और उनका असली नाम नरेंद्रनाथ भट्टाचार्य था। वे शुरु से ही तेज बुद्धि और कुछ अलग सोच रखने वाले व्यक्ति थे। जब देश में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन चल रहा था, तब वे भी एक क्रांतिकारी के रूप में इसमें शामिल हुए। उस समय उनका मुख्य लक्ष्य था कि भारत को किसी भी तरह से आज़ाद कराया जाए।

लेकिन उनका जीवन केवल क्रांतिकारी गतिविधियों तक सीमित नहीं रहा। समय के साथ उन्होंने दुनिया को समझने की कोशिश की और इसी दौरान उनका संपर्क अंतरराष्ट्रीय विचारधाराओं से हुआ। धीरे-धीरे वे मार्क्सवाद और समाजवाद की ओर आकर्षित हुए, क्योंकि इसमें उन्हें एक ऐसे समाज की कल्पना दिखी जहाँ सबको बराबरी का हक मिले। इसी सोच के चलते वे कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से जुड़े और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाई।

हालाँकि, जब उन्होंने समाजवाद को व्यवहार में लागू होते देखा, खासकर कुछ देशों में, तो उन्हें लगा कि यह व्यवस्था भी पूरी तरह सही नहीं है। इसमें कई बार व्यक्ति की स्वतंत्रता दब जाती है और सत्ता कुछ लोगों के

हाथ में केंद्रित हो जाती है। यह बात उन्हें ठीक नहीं लगी।

इसी अनुभव के आधार पर उन्होंने अपने विचारों को फिर से बदला और "रेडिकल ह्यूमनिज़्म" की ओर बढ़े। इस विचारधारा में उन्होंने मनुष्य को सबसे केंद्र में रखा और कहा कि किसी भी व्यवस्था में व्यक्ति की स्वतंत्रता, सोचने की क्षमता और नैतिकता सबसे महत्वपूर्ण होनी चाहिए। इस तरह उनका जीवन एक निरंतर सीखने और अपने विचारों को बेहतर बनाने की यात्रा के रूप में सामने आता है।

एम. एन. रॉय के अनुसार पूंजीवाद एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति को काफी हद तक स्वतंत्रता मिलती है। लोग अपनी संपत्ति के मालिक होते हैं, अपना व्यवसाय खुद चला सकते हैं और बाजार के हिसाब से चीजों की कीमत तय होती है। इस व्यवस्था में मेहनत और योग्यता के आधार पर आगे बढ़ने के अवसर मिलते हैं, इसलिए रॉय यह मानते थे कि पूंजीवाद ने समाज में नई सोच, तकनीक और विकास को बढ़ावा दिया है। लेकिन रॉय केवल इसके अच्छे पक्ष तक ही सीमित नहीं रहे। उन्होंने यह भी देखा कि पूंजीवाद के कारण समाज में एक बड़ा अंतर पैदा हो जाता है। कुछ लोग बहुत ज्यादा अमीर बन जाते हैं, जबकि बड़ी संख्या में लोग गरीबी और संघर्ष में जीते हैं। उनके अनुसार, इस व्यवस्था में मजदूरों का शोषण भी होता है, क्योंकि मेहनत करने वाला व्यक्ति अक्सर उतना लाभ नहीं पा पाता जितना उसे मिलना चाहिए।

रॉय का मानना था कि पूंजीवाद पूरी तरह गलत नहीं है, लेकिन यह अधूरा है। इसमें स्वतंत्रता तो है, लेकिन समानता की कमी है। इसलिए वे कहते हैं कि केवल पूंजीवाद के भरोसे एक न्यायपूर्ण समाज बनाना मुश्किल है, क्योंकि इसमें इंसान की गरिमा और बराबरी का पूरा ध्यान नहीं रखा जाता।

एम. एन. रॉय के अनुसार समाजवाद एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें कोशिश की जाती है कि समाज में बराबरी लाई जाए। इसमें संपत्ति और संसाधनों पर राज्य या समाज का नियंत्रण होता है, ताकि हर व्यक्ति को जीवन की जरूरी सुविधाएँ मिल सकें। शुरू में Roy को समाजवाद इसलिए अच्छा लगा क्योंकि इसमें गरीब और कमजोर लोगों के लिए न्याय की बात की जाती है और अमीर-गरीब के अंतर को कम करने की कोशिश होती है। लेकिन बाद में जब उन्होंने समाजवाद को व्यवहार में देखा, तो उन्हें कुछ बड़ी समस्याएँ भी नजर आईं। उनका मानना था कि जब राज्य के पास बहुत ज्यादा शक्ति आ जाती है, तो व्यक्ति की स्वतंत्रता कम हो जाती है। इंसान अपनी सोच और फैसलों में पूरी तरह स्वतंत्र नहीं रह पाता। कई बार ऐसा भी होता है कि सत्ता कुछ लोगों के हाथ में सिमट जाती है और वही लोग सब कुछ नियंत्रित करने लगते हैं।

रॉय के अनुसार समाजवाद का उद्देश्य तो अच्छा है, क्योंकि यह समानता और न्याय की बात करता है, लेकिन इसका तरीका हमेशा सही नहीं होता। अगर इसमें व्यक्ति की आजादी को नजरअंदाज किया जाए, तो यह एक तरह से तानाशाही में भी बदल सकता है। इसलिए वे समाजवाद को पूरी तरह सही नहीं मानते थे, बल्कि उसमें सुधार की जरूरत महसूस करते थे।

एम. एन. रॉय ने पूंजीवाद को बहुत करीब से समझा और उसकी खूबियों के साथ-साथ उसकी कमियों को भी साफ तौर पर सामने रखा। उनका मानना था कि पूंजीवाद ने समाज को आगे बढ़ाने में एक बड़ी भूमिका निभाई है, लेकिन इसके भीतर कई ऐसी समस्याएँ भी हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

रॉय के अनुसार पूंजीवाद की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक असमानता है। इस व्यवस्था में धीरे-धीरे धन कुछ गिने-चुने लोगों के पास जमा हो जाता है, जबकि आम लोग संघर्ष करते रह जाते हैं। इससे समाज में अमीर और गरीब के बीच की दूरी लगातार बढ़ती जाती है। इसके साथ ही उन्होंने मजदूरों के शोषण की बात भी उठाई। उनका कहना था कि मजदूर मेहनत तो बहुत करते हैं, लेकिन उन्हें उसका उचित लाभ नहीं मिलता, जबकि पूंजी के मालिक ज्यादा फायदा उठा लेते हैं।

रॉय ने यह भी कहा कि पूंजीवाद का विस्तार कई बार साम्राज्यवाद के रूप में सामने आता है। यानी ताकतवर देश कमजोर देशों का आर्थिक और राजनीतिक शोषण करने लगते हैं। इस सोच पर कहीं न कहीं काल

मार्क्स का प्रभाव भी दिखाई देता है, जिन्होंने पूंजीवाद की आलोचना इसी तरह की थी। लेकिन रॉय का नजरिया पूरी तरह एकतरफा नहीं था। उन्होंने पूंजीवाद के सकारात्मक पहलुओं को भी स्वीकार किया। उनका मानना था कि इस व्यवस्था ने विज्ञान और तकनीक को आगे बढ़ाया, उत्पादन में वृद्धि की और आधुनिक समाज के विकास में मदद की। इसलिए वे यह नहीं कहते थे कि पूंजीवाद पूरी तरह गलत है, बल्कि उनका मानना था कि इसमें सुधार की जरूरत है ताकि यह व्यवस्था अधिक न्यायपूर्ण और संतुलित बन सके।

एम. एन. रॉय शुरुआत में समाजवाद से काफी प्रभावित थे। उन्हें लगता था कि यह एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज में बराबरी ला सकती है और गरीब लोगों को न्याय दिला सकती है। इसी सोच के कारण वे अंतरराष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन से जुड़े और सक्रिय रूप से इसमें हिस्सा लिया। उस समय उन्हें विश्वास था कि समाजवाद ही एक बेहतर और न्यायपूर्ण समाज बनाने का रास्ता है।

लेकिन जैसे-जैसे उन्होंने इस विचारधारा को व्यवहार में लागू होते देखा, खासकर सोवियत संघ जैसे देशों में, उनका नजरिया बदलने लगा। Roy को महसूस हुआ कि समाजवाद के नाम पर राज्य के पास बहुत ज्यादा शक्ति इकट्ठा हो गई है। जब राज्य हर चीज को नियंत्रित करने लगता है, तो आम व्यक्ति की स्वतंत्रता धीरे-धीरे कम हो जाती है। लोगों के पास अपने विचार खुलकर रखने या अपनी पसंद के अनुसार जीवन जीने की आजादी सीमित हो जाती है।

रॉय को यह भी लगा कि कई जगहों पर समाजवाद तानाशाही में बदल गया है। सत्ता कुछ लोगों के हाथ में सिमट जाती है और वही लोग पूरे समाज को नियंत्रित करने लगते हैं। यह स्थिति उन्हें ठीक नहीं लगी, क्योंकि वे मानते थे कि किसी भी व्यवस्था में व्यक्ति की स्वतंत्रता बहुत जरूरी है।

इसी कारण उन्होंने समाजवाद की आलोचना की और कहा कि इसमें व्यक्ति को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता। उनकी सोच यहाँ पर व्लादिमीर लेनिन से अलग हो गई, क्योंकि लेनिन राज्य की मजबूत भूमिका के पक्ष में थे, जबकि रॉय व्यक्ति की स्वतंत्रता को ज्यादा महत्वपूर्ण मानते थे।

इस तरह रॉय ने यह समझाया कि समाजवाद का उद्देश्य भले ही अच्छा हो, लेकिन अगर उसमें व्यक्ति की आजादी और उसकी सोच को नजरअंदाज किया जाए, तो वह व्यवस्था भी अधूरी रह जाती है।

पूंजीवाद और समाजवाद का द्वंद्व : एम. एन. रॉय ने जब पूंजीवाद और समाजवाद दोनों को गहराई से समझा, तो उन्हें लगा कि इन दोनों के बीच एक तरह का लगातार चलने वाला संघर्ष है। यह संघर्ष केवल आर्थिक व्यवस्था का नहीं है, बल्कि यह इस बात से जुड़ा है कि समाज में किस चीज को ज्यादा महत्व दिया जाए—व्यक्ति की स्वतंत्रता या सबके लिए समानता।

रॉय के अनुसार पूंजीवाद व्यक्ति को ज्यादा आजादी देता है। इसमें लोग अपने हिसाब से काम कर सकते हैं, अपनी संपत्ति बना सकते हैं और अपने फैसले खुद ले सकते हैं। लेकिन इसी के साथ एक बड़ी समस्या यह भी है कि इसमें समानता कम होती है। समाज में कुछ लोग बहुत आगे निकल जाते हैं, जबकि बहुत से लोग पीछे रह जाते हैं।

दूसरी तरफ समाजवाद है, जो समानता की बात करता है। इसमें कोशिश की जाती है कि सभी लोगों को बराबर अवसर मिलें और संसाधनों का बंटवारा न्यायपूर्ण तरीके से हो। लेकिन Roy को यह लगा कि इस प्रक्रिया में व्यक्ति की स्वतंत्रता कहीं न कहीं कम हो जाती है। जब राज्य ज्यादा नियंत्रण करने लगता है, तो लोगों के पास अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीने की गुंजाइश कम रह जाती है।

इसी कारण रॉय ने कहा कि असली समस्या "स्वतंत्रता बनाम समानता" की है। अगर हम केवल स्वतंत्रता पर ध्यान दें, तो असमानता बढ़ती है, और अगर केवल समानता पर जोर दें, तो स्वतंत्रता कम हो जाती है। रॉय का मानना था कि एक अच्छा समाज वही होगा जहाँ इन दोनों के बीच संतुलन बनाया जा सके।

इस तरह उन्होंने यह समझाने की कोशिश की कि पूंजीवाद और समाजवाद दोनों अपने-अपने तरीके से अधूरे हैं,

और जरूरी है कि हम एक ऐसा रास्ता खोजें जिसमें व्यक्ति की आजादी भी बनी रहे और समाज में बराबरी भी कायम हो सके।

रेडिकल ह्यूमनिज़्म: रॉय का समाधान : एम. एन. रॉय ने जब यह महसूस किया कि पूंजीवाद और समाजवाद दोनों ही पूरी तरह से सही नहीं हैं, तो उन्होंने एक नया रास्ता खोजने की कोशिश की। इसी सोच से "रेडिकल ह्यूमनिज़्म " की अवधारणा सामने आई। यह एक ऐसी विचारधारा थी जिसमें उन्होंने सबसे ज्यादा महत्व मनुष्य को दिया, न कि राज्य को और न ही बाजार को।

रॉय का मानना था कि किसी भी समाज की असली ताकत उसका व्यक्ति होता है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र नहीं होगा, तो कोई भी व्यवस्था सही तरीके से काम नहीं कर सकती। इसलिए उन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता को सबसे ऊपर रखा। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि समाज को तर्क और विज्ञान के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए, न कि अंधविश्वास या परंपराओं के दबाव में।

उन्होंने लोकतंत्र को भी एक अलग नजर से देखा। उनके अनुसार सिर्फ चुनाव करवा देना ही लोकतंत्र नहीं है, बल्कि लोगों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। वे चाहते थे कि सत्ता का केंद्रीकरण कम हो और निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक विकेंद्रीकृत हो, ताकि आम लोग भी इसमें भाग ले सकें। इसके साथ ही रॉय ने नैतिकता और मानव गरिमा पर भी जोर दिया। उनका मानना था कि हर व्यक्ति का सम्मान होना चाहिए और उसे अपने जीवन को बेहतर बनाने का अवसर मिलना चाहिए।

इस तरह "**रेडिकल ह्यूमनिज़्म** " एक संतुलित सोच के रूप में सामने आता है। यह न तो पूरी तरह पूंजीवाद की तरह सिर्फ स्वतंत्रता पर जोर देता है और न ही समाजवाद की तरह केवल समानता पर, बल्कि यह दोनों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है, जिसमें मनुष्य सबसे केंद्र में रहता है।

आज के समय में रॉय के विचारों की प्रासंगिकता : एम. एन. रॉय के विचार आज के समय में भी बहुत मायने रखते हैं। अगर हम आज की दुनिया को देखें, तो पाएंगे कि पूंजीवाद काफी मजबूत हो चुका है। वैश्वीकरण के कारण बड़े-बड़े उद्योग, कंपनियाँ और बाजार पूरी दुनिया को प्रभावित कर रहे हैं। तकनीक का तेजी से विकास हुआ है, लोगों की जीवनशैली बदली है और आर्थिक गतिविधियाँ भी बढ़ी हैं। लेकिन इसके साथ ही एक सच्चाई यह भी है कि अमीर और गरीब के बीच का अंतर अभी भी बना हुआ है, बल्कि कई जगहों पर और बढ़ गया है।

दूसरी तरफ समाजवाद भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है, बल्कि वह नए रूप में सामने आ रहा है। कई देश अब ऐसी नीतियाँ अपना रहे हैं, जिनमें लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और बराबरी के अवसरों पर जोर दिया जा रहा है। यानी आज की दुनिया में कहीं न कहीं पूंजीवाद और समाजवाद दोनों का मिश्रण देखने को मिलता है।

ऐसे समय में रॉय के विचार हमें एक संतुलित नजरिया देते हैं। वे हमें यह समझाते हैं कि केवल आर्थिक विकास को ही सब कुछ नहीं मान लेना चाहिए। अगर किसी देश में पैसा तो बहुत है, लेकिन लोगों के पास स्वतंत्रता नहीं है या उन्हें सम्मान के साथ जीने का अवसर नहीं मिलता, तो वह विकास अधूरा है। इसी तरह अगर समानता लाने के चक्कर में व्यक्ति की आजादी को दबा दिया जाए, तो वह भी सही नहीं है।

रॉय का जोर इस बात पर था कि हर व्यक्ति को अपनी सोच रखने, अपनी बात कहने और अपने तरीके से जीवन जीने की आजादी मिलनी चाहिए। साथ ही समाज में ऐसा माहौल भी होना चाहिए, जहाँ कोई भी व्यक्ति खुद को कमजोर या उपेक्षित महसूस न करे। यानी स्वतंत्रता और समानता दोनों का संतुलन बहुत जरूरी है।

आज के समय में जब दुनिया कई तरह की समस्याओं से जूझ रही है, जैसे आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, और सामाजिक तनाव, तब रॉय के विचार हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि हमें किस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। वे हमें सिखाते हैं कि किसी एक विचारधारा को पूरी तरह सही मानने के बजाय, हमें एक ऐसा रास्ता अपनाना चाहिए जो मनुष्य के हित में हो।

इस तरह कहा जा सकता है कि रॉय के विचार आज भी हमें एक संतुलित, मानवीय और व्यावहारिक सोच की ओर ले जाते हैं, जो वर्तमान समय की जरूरत भी है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : एम. एन. रॉय के विचारों का अगर हम शांत तरीके से मूल्यांकन करें, तो यह साफ दिखाई देता है कि उन्होंने पूंजीवाद और समाजवाद दोनों को बहुत संतुलित नजर से देखा। वे किसी एक विचारधारा के पक्ष में पूरी तरह खड़े नहीं होते, बल्कि दोनों की अच्छाइयों और कमियों को समझने की कोशिश करते हैं। यही उनकी सबसे बड़ी ताकत मानी जाती है। उन्होंने यह बताया कि पूंजीवाद व्यक्ति को स्वतंत्रता देता है, लेकिन उसमें समानता की कमी है। वहीं समाजवाद समानता लाने की कोशिश करता है, लेकिन कई बार वह व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। इस तरह रॉय का चिंतन हमें एक संतुलित दृष्टिकोण देता है, जो आज के समय में भी काफी उपयोगी लगता है।

उनका सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने मनुष्य को केंद्र में रखा। उनके लिए किसी भी व्यवस्था से ज्यादा महत्वपूर्ण व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी गरिमा थी। उन्होंने यह बात बहुत स्पष्ट तरीके से कही कि अगर किसी भी व्यवस्था में इंसान की आजादी नहीं है, तो वह व्यवस्था टिकाऊ नहीं हो सकती। यही कारण है कि उनके "रेडिकल ह्यूमनिज़्म " में मानव स्वतंत्रता, तर्क और नैतिकता को बहुत महत्व दिया गया है। यह सोच आज के समय में भी हमें एक सही दिशा दिखाती है, खासकर तब जब हम कई तरह की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

लेकिन अगर हम उनकी सोच की सीमाओं की बात करें, तो कुछ बातें सामने आती हैं। सबसे पहले, रेडिकल ह्यूमनिज़्म एक बहुत अच्छा और आदर्श विचार तो लगता है, लेकिन इसे व्यवहार में लागू करना आसान नहीं है। समाज बहुत जटिल होता है, जिसमें अलग-अलग तरह के लोग, हित और परिस्थितियाँ होती हैं। ऐसे में केवल विचार के स्तर पर संतुलन की बात करना और उसे जमीन पर उतारना दो अलग-अलग चीजें हैं।

दूसरी बात यह है कि रॉय की यह सोच कई बार ज्यादा सैद्धांतिक लगती है। उन्होंने जो रास्ता सुझाया, वह व्यावहारिक राजनीति में उतना प्रभावी नहीं हो पाया। उनके विचारों का प्रभाव बौद्धिक स्तर पर ज्यादा दिखता है, लेकिन बड़े पैमाने पर समाज या शासन व्यवस्था में इसे अपनाया नहीं जा सका।

फिर भी, इन सीमाओं के बावजूद रॉय के विचारों का महत्व कम नहीं होता। उन्होंने हमें यह सिखाया कि किसी भी विचारधारा को आंख बंद करके नहीं अपनाना चाहिए, बल्कि उसे समझना और परखना जरूरी है। इस तरह उनका चिंतन आज भी हमें एक संतुलित और सोच-समझकर निर्णय लेने की प्रेरणा देता है।

निष्कर्ष : एम. एन. रॉय के विचारों को समझने के बाद यह साफ हो जाता है कि उन्होंने पूंजीवाद और समाजवाद दोनों को एक संतुलित नजर से देखा। उन्होंने यह नहीं कहा कि कोई एक व्यवस्था पूरी तरह सही है और दूसरी पूरी तरह गलत, बल्कि उन्होंने यह समझाने की कोशिश की कि दोनों में अपनी-अपनी अच्छाइयाँ और कमियाँ हैं। पूंजीवाद जहाँ व्यक्ति को स्वतंत्रता देता है, वहीं समाजवाद समानता की बात करता है। लेकिन जब इनमें से किसी एक को ज्यादा महत्व दिया जाता है, तो दूसरी चीज कमजोर पड़ जाती है।

रॉय का सबसे बड़ा संदेश यही है कि हमें किसी भी विचारधारा को बिना सोचे-समझे नहीं अपनाना चाहिए। हर विचार को समझना, उसके अच्छे और बुरे पहलुओं को देखना और फिर अपने समय और जरूरत के हिसाब से उसे अपनाना ज्यादा सही तरीका है। उन्होंने अपने जीवन में भी यही किया। वे समय के साथ अपने विचारों को बदलते रहे और हमेशा सच्चाई के करीब पहुँचने की कोशिश करते रहे।

उनका **"रेडिकल ह्यूमनिज़्म"** इसी सोच का परिणाम है। इसमें उन्होंने यह बताया कि किसी भी समाज का असली केंद्र मनुष्य होना चाहिए। अगर व्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं होगी, तो कोई भी व्यवस्था सही तरीके से काम नहीं कर सकती। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी माना कि केवल स्वतंत्रता ही काफी नहीं है, समाज में समानता और नैतिकता भी उतनी ही जरूरी है।

आज के समय में, जब दुनिया कई तरह की समस्याओं से जूझ रही है, रॉय के विचार हमें एक संतुलित रास्ता दिखाते हैं। वे हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि विकास केवल आर्थिक नहीं होना चाहिए, बल्कि वह मानवीय भी होना चाहिए। इस तरह उनका चिंतन आज भी हमें एक बेहतर और न्यायपूर्ण समाज बनाने की दिशा में सोचने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ सूची :

1. एम. एन. रॉय (1947). *नया मानववाद: एक घोषणापत्र.* कलकत्ता: रिनेसां पब्लिशर्स।
2. एम. एन. रॉय (1952). *तर्क, रोमांटिकता और क्रांति.* बॉम्बे: एलाइड पब्लिशर्स।
3. काल मार्क्स (1867). *दास कैपिटल (पूंजी).* हैम्बर्ग: ओटो माइस्नर वेरलाग।
4. व्लादमीर लेनिन (1917). *राज्य और क्रांति.* मॉस्को: प्रोग्रेस पब्लिशर्स।
5. वी. बी. कर्णिक (1970). *एम. एन. रॉय: एक राजनीतिक जीवनी.* बॉम्बे: पॉपुलर प्रकाशन।
6. बी. एल. शर्मा (2005). *भारतीय राजनीतिक चिंतन.* जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
7. बिपन चंद्रा (2009). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम.* नई दिल्ली: पेंगुइन।
8. सुब्रत मुखर्जी एवं सुशीला रामास्वामी (2012). *राजनीतिक विचारों का इतिहास: प्लेटो से मार्क्स तक.* नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग।
9. ए. अप्पादोराई (2003). *राजनीति का सार.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. जॉर्ज एच. सबाइन (2009). *राजनीतिक सिद्धांत का इतिहास.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड एंड आईबीएच पब्लिशिंग।
11. जे. सी. जोहारी(2010). *समकालीन राजनीतिक सिद्धांत.* नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
12. एस. पी. वर्मा (2011). *आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत.* नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
13. समरेन रॉय (1989). *बेचैन ब्राह्मण: एम. एन. रॉय का प्रारंभिक जीवन.* कोलकाता: रूपा पब्लिकेशन्स।
14. आर्ची ब्राउन (2009). *साम्यवाद का उदय और पतन.* लंदन: बोडले हेड।
15. एंड्रयू हेवुड (2017). *राजनीतिक विचारधाराएँ: एक परिचय.* लंदन: पालग्रेव मैकमिलन।

•